

॥ श्रीमद्देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणप्रणीत ॥

श्री नन्दीसूत्र मूलपाठः ।

जयइ जगजीवजोणी वियाणओ। जगगुरू जगाणंदो।
जगणाहो जगबंधू । जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥
जयइ सुआणं पभवो । तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ॥
जयइ गुरूलोगाणं। जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥
भद्दं सव्वं जगुज्जोयगस्स । भद्दं जिणस्स वीरस्स ॥
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स । भद्दं धुयरयस्स ॥३॥
गुणभवणगहण।सुयरयण भरियदंसणविसुद्धरत्थागा॥
संघ नगर भद्दं ते। अखंड चारित्तपागारा ॥४॥
संजम तव तुंबारयस्स । नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥५॥
भद्दं सील पडागूसियस्स। तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥
संघरहस्स भगवओ । सज्झाय सुनंदिघोसस्स ॥६॥

कम्मरय जलोह विणिग्गयस्स। सुयरयण दीहनालस्स।
पच महव्वय थिरकन्नियस्स । गुणकेसरालस्स ॥७॥
सावग जण महुअरि परिवुडस्स। जिण सूर तेय बुद्धस्स।
सघपउमस्स भद्द। समण गण सहस्स पत्तस्स ॥८॥
तव सजम मयलछण। अकिरिय राहुमुह दुद्धरिसनिच्चं।
जय सघ चद। निम्मल सम्मत्त विसुद्ध जोण्हागा ॥९॥
पर तित्थिय गह पह नासगस्स। तवतेय दित्त लेसस्स।
नाण ज्जोयस्स जए भद्द दम संघ सूरस्स ॥१०॥
भद्द धिइ वेला परिगयस्स। सज्झाय जोग मगरस्स ॥
अक्खोहस्स भगवओ। सघ समुद्दस्स रुद्दस्स ॥११॥
सम्म दसण वर वइर दढ रूढ गाढावगाढ पेढस्स ॥
धम्म वररयण मंडिय चामीयर मेहलागस्स ॥१२॥
निय मूसिय कणय सिलायलुज्जल जलंत चित्तकूडस्स॥
नदण वण मणहर सुरभि सील गधुद्धुमायस्स ॥१३॥
जीवदया सुदर कद दद्दरिय मुणिवर मइद इन्नस्स ॥
हेउ सय धाउ पगलंत रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥१४॥
संवर वर जल पगलिय उज्झर पविराय माणहारस्स ॥
सावग जण पउर रयत मोर नच्चत कुहरस्स ॥१५॥
विणय नय पवर मुणिवर फुरत विज्जुज्जलंत सिहरस्स।
विविह गुण कप्प रुक्खग फलभर कुसुमाउल
वणस्स ॥१६॥

नाए वर रयए दिप्पंत कंत वेरुलिय विमल चूलस्स ॥
वंदामि विणय पणओ संघ महामंदर गिरिस्स ।१७।।
गुण रयणुज्जल कडय सील सुगधि तव मडिउद्देस ॥
सुयवारसगसिरर सघ महामंदर वदे ॥१८॥
नगर रह चक्र पउमे चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि ॥
जो उवमिज्जइ सयय तं सघगुणायर वंदे ॥१९॥
वदे उसभ अजियं संभव मभिनंदण सुमइ सुप्पंभ
सुपासं ॥
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जसं वासुपुज्ज च ॥२०॥
विमल मणंत य धम्मं सन्ति कुथु अरं च मल्लिं च ॥
मुनिसुव्वय नमिनेर्मि पास तह वद्धमाण च ॥२१॥
पढमित्थ इदभूइ बीए पुणहोइ अग्गिभूइत्ति ॥
तईए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मेय ॥२२॥
मंडिअ मोरिय पुत्ते अकपिए चेव अयल भायाय ॥
मे यज्जेय पहासेय गणहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥
निव्वुइ पह सासणय जयइ सया सव्व भाव देसणय ॥
कु समय मय नासणय जिणिदवर वीरसासणय ॥२४॥
सुहम्म अग्गिवेसाण जवुनाम च कासवं पभव ॥
कचायण वदे वच्छं सिज्जभव तहा ॥२५॥
जसभद्द तुगिय वंदे सभूय चेव माढर ॥
भद्दबाहु च पाइन्न थूलभद्द च गोयमं ॥२६॥

एलावचसगोत्त वदामि महागिरिं सुहत्थिं च ॥
तत्तो कोसियगोत्त बहुलस्स सरिव्वय वन्दे ॥२७॥
हारिय गुत्त साइ च वदिमो हारिय च सामज्ज ॥
वन्दे कोसिय गोत्त सडिल्ल अज्ज जीयघर ॥२८॥
तिसमुद्दखायकित्ति दीव समुद्देसु गहिय पेयाल ॥
वदे अज्ज समुद्द अक्खुभिय समुद्दगभीर ॥२९॥
भणग करग भरग पभावग णाणदसण गुणाण ॥
वदामि अज मगु सुय सागर पारग धीर ॥३०॥
वदामि अज्ज धम्म तत्तो वदे य भद्द गुत्त च ॥
तत्तोय अज्ज वइर तव नियम गुणेहिं वइरसम ॥३१॥
वदामि अज्ज रक्खिय खमणे रक्खिय चारित्त
स वस्से ॥
रयण करडग भूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥३२॥
नाणम्मि दसण म्मिय तव विणए णिच काल मुज्जुत्त ॥
अज्ज नदिलखमण सिरसा वदे पसन्नमण ॥३३॥
वड्ढउ वायगवसो जसवसो अज्ज नागहत्थीण ॥
वागरण करण भगिय कम्मप्पयडी पहाणाण ॥३४॥
जचजण धाउ समप्पहाण मुद्दिय कुवलय निहाण ॥
वड्ढउ वायगवसो रेवइनक्खत्त नामाणं ॥३५॥
अयलपुरा णिक्खते कालियसुय आणुओगिए धीरे
बभद्दीवगसीरे वायगपय मुत्तमं पत्ते ॥"

जेसिं इमो अणुओगो पयरइ अज्जावियड्ढभरहम्मि ॥
बहु नयर निग्गय जसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥३७॥
तत्तो हिमवन्त महत विक्कमे धिइ परक्कम मणंते ॥
सज्झाय मणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥३८॥
कालिय सुय अणु ओगस्स धारए धारए य पुव्वाण ॥
हिमवंत खमा समणे वंदे णागज्जुणायरिये ॥३९॥
मिउमद्दव संपन्ने आणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते ॥
ओहसुय समायारे नागज्जुण वायए वदे ॥४०॥
गोविदाण पि नमो अणुओगे विउल धारिणिं दाणं ॥
णिचं खति दयाण परूवणे दुल्लभि दाणं ॥४१॥
तत्तो य भूयदिन्न निचं तव सजमे अनिव्विएणं ॥
पंडिय जण सामण्णं वदामो सजम विहिण्णु ॥४२॥
वरकणगतविय चपग विमउलवर कमल गब्भ सरिवन्ने॥
भविय जणहियय दइए दयागुण विसारए धीरे ॥४३॥
अड्ढ भरहप्पहाणे बहुविह सज्झाय सुमुणिय पहाणे ।
अणुओगिय वर वसभे नाइल कुल वंसनदिकरे ॥४४॥
भूयहियअपगब्भे वंदेऽहं भूयदिन्न मायरिए ॥
भवभय वुच्छेय करे सीसे नागज्जुण रिसीण ॥४५॥
सुमुणिय निचा निचं सुमुणिय सुत्तत्थ धारयं वन्दे ॥
सब्भावुब्भावणया तत्थं लोहिच्चणामाणं ॥४६॥

अत्थ महत्थक्खाणिं सुसमण वक्खाण कहण ॥
निव्वाणिं ॥

पयईए महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥४७॥
तव नियम सच संजम विणयज्जव खंति मद्दवरयाणं ॥
सील गुणगद्दियाण अणुओग जुगप्पहाणाण ॥४८॥
सुकुमाल कोमल तले तेसिं पणमामि लक्खण पसत्थे
पाए पावयणीण पडिच्छ सय एहिं पणि वइए ॥४९॥
जे अन्ने भगवन्ते कालिय सुय आणु ओगिए धीरे ॥
ते पणमिऊण सिरसा नाणस्स परूवणा वोच्छं ॥५०॥

इति ।

सेल घण[1], कुडग[2], चालणि[3], परिपूणग[4], हंस[5], महिस[6], मेसे[7] य, मसग[8], जलुग[9], बिराली[10], जाहग[11], गो[12], भेरी[13] आभीरी[14] ॥५१॥

"सा समासओ तिविहा पन्नत्ता तजहा जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा" जाणिया जहा खीरमिव, जहा हंसा जे [illegible]न्ति इह गुरुगुण समिद्धा दोसे य विवज्जति त [illegible]एसु जाणिय परिस ॥५२॥ अजाणिया जहा–जा होइ पगइमहुरा मियछावय सीह कुक्कुडय भूआ। रयणमिव असठविया। अजाणिया साभवे परिसा ॥५३॥ दुव्वियड्ढा जहा–नय कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं। वत्थिव्व वायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो दुव्वियट्ढो ॥५४॥ (सूत्र) नाण पञ्चविह पन्नत्तं, तजहा–आभिणि बोहियनाण सुयनाण, ओहिनाणं, मणपज्जवनाण, केवलनाण॥ १ ॥ तं समासओ दुविहं पण्णत, तजहा–पच्चक्खं च परोक्खं च ॥ सू० २ ॥ से कि त पच्चक्ख ? पच्चक्ख दुविहंपण्णत्त, तजहा इदियपच्चक्ख। नोइंदियपच्चक्ख च ॥ सू० ३ ॥ से किं त इदिय पच्चक्ख ? इदियपच्चक्ख पञ्चविह पण्णत्त, तजहा–सो इंदियपच्चक्ख। चक्खिदिय पच्चक्ख। घाणिंदिय पच्चक्ख। जिब्भिदिय पच्चक्ख। फासिंदिय पच्चक्खं। सेत इंदियपच्चक्ख ॥ सू० ४ ॥ से किं त नोइंदियपच्चक्ख ? नोइंदियपच्चक्खं तिविह पण्णत्त तजहा–ओहिनाण पच्चक्ख। मणपज्जवनाण पच्चक्ख। केवलनाण

अणाणु गामिय ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एग महंत जोइट्ठाण काउ तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरं तेहिं परिपेरंतेहिं, परिघोले माणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाण पासइ, अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेव अणाणुगामिए ओहिनाण जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव सखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ, अन्नत्थगए ण पासइ, से त्त अणाणुगामिए ओहिनाण ॥ ११ ॥ से किं त वड्ढमाणय ओहिनाण ? वड्ढमाणयं ओहिनाण पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वड्ढमाण चरित्तस्स। विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण चरित्तस्स। सव्वओ समता ओहि वड्ढइ—

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स॥
ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्त जहन्न तु ॥५५॥
सव्व बहु अगणि जीवा निरतर जत्तिय भरिज्जसु॥
खित्त सव्वदिसाग परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ॥५६॥
अगुलमावलियाए भाग मसखिज्ज दोसु सखिज्जा ॥
अगुलमावलियतो आवलिया अगुल पुहुत्त ॥५७॥
हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि योद्धव्वो ॥
जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खतो पन्नवीसाओ ॥५८॥

भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुदीवम्मि साहिओ मासा ॥
वासं च मणुय लोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥५६॥
संखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दावि हुंति संखिज्जा ॥
कालम्मि असंखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥६०॥
काले चउण्हवुड्ढी, कालो भइयव्वु खित्त वुड्ढीए ॥
वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥६१॥
सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं ॥
अंगुल सेढी मित्ते, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥६२॥
से त्तं वड्ढमाणय ओहिनाण सू॥१२॥ से किं त हीयमाणयं ओहिनाणं? हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वड्ढमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स संकिलिस्स माणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समन्ता ओही परिहायइ से त्तं हीयमाणय ओहिनाणं ॥१३॥ से किं त पडिवाइ ओहिनाणं? पडिवाइ ओहिनाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जय भाग वा संखिज्जय भाग वा वालग्गं वा वालग्ग पुहुत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहुत्तं वा, जूयं वा जूयपुहुत्तं वा, जवं वा जव पुहुत्त वा। अंगुल वा अंगुलपुहुत्त वा। पायं वा पाय पुहुत्त वा। विहत्थि वा विहत्थि पहुत्त वा। रयणिं वा रयणि पुहुत्त वा। कुच्छिं वा कुच्छिपुहुत्तं वा, धणुं वा धणुपहुत वा। गाउअ वा गाउयपुहुत्त वा। जोयण

चा जोयणपुहुत्त वा। जोअणसय वा जोयणसय पुहुत्त वा जोयण सहस्स वा जो यणसहस्स पुहुत्त वा। जो यणलक्ख वा जोयणलक्ख पुहुत्त वा। जोयण-कोडिं वा जोयणकोडि पुहुत्त वा। जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्त वा। [जो अणसखिज्जं-वा जो अणसखिज्ज पुहुत्त वा। जो अण असखेज्जवा जो अणअसखेज्जपुहुत्तवा।] उक्कोसेण लोगं वा पासि त्ताण पडिवइज्जा। से त पडिवाइ ओहिनाणं ॥१४॥ से किं त अपडिवाइ ओहिनाणं। अपडिवाइ ओहिं-नाणजेण अलोगस्स एगमवि आगासपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ ओहिनाणं। से त्तं अपडिवाइ ओहिनाणं ॥१५॥ त समासओ चउव्विहं पण्णत्त, त-जहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्व ओ ण ओहिनाणी जहन्नेणं अणताइ रूविदव्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलस्स असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखि-ज्जाइं अलोगे लोगप्पमाण मित्ताइं खडाइं जाणइ पासइ, कालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आवलि-याए असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय

मणागय च काल जाणइ पासइ, भावओ णं ओहि- नाणी जहन्नेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्केसेणवि अणते भावे जाणइ पासइ। सव्व भावाण मणत भागं भावे जाणइ पासइ ॥१६॥ ओही भवपचइओ गुण- पचइओ य वण्णिओ दुविहो। तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य कालेय। नेरइयदेवतित्थकरा य ओहि- स्सऽवाहिरा हुंति। पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति। से त्त ओहिनाणपच्चक्ख से किं तं मणपज्जवनाण? मणपज्जवनाणे ण भंते! किं मणुस्साण उप्पज्जइ अमणुस्साण? गोयमा! मणुस्साण नो अमणुस्साणं०? जइमणुस्साणं किं समुच्छिममणुस्साण गब्भवक्कतिय मणुस्साण? गोयमा? नोसंमुच्छिममणुस्साण उपज्जइ गब्भवक्क- तियमणुस्साण। जइगब्भवक्कतियमणुस्साण कि कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अकम्मभू- मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अन्तरदीवगगब्भवक्क- तिय मणुस्साण, गोयमा? कम्मभूमिय गब्भक्क- तियमणुस्साण, नो अकम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणु- स्साण, नो अन्तरदीवग गब्भ वक्कतियमणुस्साणं जइ कम्मभूमिपगब्भवक्कतियमणुस्साण, किं सखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण

असखिज्जयासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ? सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो असखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण। जइ सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण किं पज्जत्तग सखेज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ! पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण। जइ पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण॰ किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ? सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण॰, नो सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग

सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, जइ सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउयं कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं किं संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, असंजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं, । सजया सजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं ? गोयमा! सजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं, नो असजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं। नो सजयासजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण । जइ सजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं किं पमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं, अपमत्त सजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ? अपमत्तसजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु-

स्साणं, नो पमत्त सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं। जइ अपमत्त सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं, किं इड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं अणिड्ढीपत्त अपमत्त सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं? गोयमा! इड्ढीपत्त अपमत्त सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो अणिड्ढीपत्त अपमत्तसजयसम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण। मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ॥ सू० ॥ १७ ॥ त च दुविहं उप्पज्जइ तजहाउज्जुमई य विउलमई य त समासओ चउव्विह पन्नत्त तजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ ण उज्जुमई अणते अणत पएसिए खंधे जाणइ पासइ, त चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ। खित्तओ णं उज्जुमई यजहन्नेणं अगुलस्स असखेज्जय भागं उक्कोसेण अ

जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डग पयरे उड्ढ जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अन्तोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु तीसाए अकम्मभूमिसु छपन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्निपचेंदियाणं पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ त चेव विउलमई अड्ढाईज्जेहिमगुलेहिं अब्भहियत्तरं विउलत्तरं विसुद्धतर वितिमिरतराग खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ ण उज्जुमई जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभाग उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणागय वा काल जाणइ पासइ। त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ। भावओ ण उज्जुमई अणते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाण अणतभाग जाणइ पासइ। त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतरागं वितिमिरतराग जाणइ पासइ। मणपज्जवनाण पुण जणमणपरिचिंतियत्थपागडण। माणुसखित्तनिबद्ध, गुणपच्चइय चरित्तवओ॥ ६५॥ से त्त मणपज्जवनाण॥ सू०॥ ॥ १८॥ से किं त केवलनाण? केवलनाण दुविहं पन्नत्त, तजहा—भवत्थकेवलनाण च सिद्धकेवल-

नाण च। से किं त भवत्थकेवलनाण? भवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा—सजोगिभवत्थकेवलनाण च अजोगिभवत्थकेवलनाण च। से किं त सजोगिभवत्थकेवलनाण? सजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा—पढमसमयसजोगिभवत्थ, केवलनाण च अपढम समय सजोगिभवत्थकेवलनाण च, अहवा चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाण च अचरम समयसजोगिभवत्थकेवलनाण च, से त्त सजोगिभवत्थकेवलनाण। से किं त अजोगिभवत्थकेवलनाण? अजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा—पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च अचरमसमय अजोगिभवत्थकेवलनाण च, से त्त अजोगिभवत्थकेवलनाण, से त्त भवत्थकेवलनाण ॥सू० ॥ १९ ॥ से किं त सिद्धकेवलनाण? सिद्धकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा—अणतरसिद्धकेवलनाण च परपरसिद्धकेवलनाण च ॥सू०॥२०॥ से किं त अणतरसिद्धकेवलनाण? अणतरसिद्धकेवलनाण पन्नरसविह पण्णत्त, तजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४, सयबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्ध

सिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा ७, इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरिसलिंगसिद्धा ९, नपुमगलिंगमिद्धा १०, सलिंग-सिद्धा ११, अन्नलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंगसिद्धा १३, एगसिद्धा १४, अणेगसिद्धा १५, से त्त अणंतरसिद्ध-केवलनाण ॥सू०॥२१॥ से किं त परपरसिद्धकेवल-नाण ? परपरसिद्धकेवलनाणं अणेगविह पएणत्त, तजहा—अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिस-मयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव दससमयमिद्धा, संखिज्जसमयसिद्धा, असंखिज्जसमयसिद्धा, अणत-समयसिद्धा, से त्तं परंपरसिद्धकेवलनाणं, से त्तं सिद्धकेवलनाण ॥ तं समासओ चउव्विह पएणत्तं, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ ण केवलनाणी सव्व खित्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलनाणी सव्वं काल जाणइ पासइ। भावओ ण केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ। अह सव्वदव्वपरिणाम, भावविएणत्तिकार-णमणतं। सासय मप्पडिवाइ, एगविहं केवल नाणं ॥ ६६ ॥ सू० ॥२२॥ केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पएणवणजोगे। ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुय हवइ सेसं ॥६७॥ से त्तं केवलनाण, से त्तं नोइंदियपच्चक्खं,

से त्त पच्चक्खनाण ॥सू०॥२३॥ से किं तं परोक्खनाण? परोक्खनाण दुविहं पन्नत्त, त जहा—आभिणिबोहिय-नाणपरोक्ख च, सुयनाण परोक्ख च, जत्थ आभि-णिबोहियनाण तत्थ सुयनाण, जत्थ सुयनाण तत्था-भिणिबोहियनाण, दोऽवि एयाइं अण्णमण्णमणुग-याइं, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्त पण्णवयति-अभिनिबुज्झइत्ति आभिणिबोहियनाण, सुणेइत्ति सुय, मइपुव्व जेण सुय, न मई सुयपुव्विया ॥सू०॥ ॥२४॥ अविसेसिया मई, मइनाण च मइअन्नाण च। विसेसिया सम्मद्दिट्ठिस्स मई मइनाण, मिच्छद्दिट्ठिस्स मई मइअन्नाण। अविसेसिय सुय सुयनाणं च सुय अन्नाण च। विसेसिय सुय सम्मद्दिट्ठिस्स सुय सुय-नाण, मिच्छद्दिट्ठिस्स सुय सुयअन्नाण ॥सू०॥ २५॥ से किं तआभिणिबोहियनाण? आभिणिबोहियनाणं दुविहं पण्णत्त, तजहा—सुयनिस्सिय च, अस्सुय-निस्सिय च। से किं त अस्सुयनिस्सिय? अस्सुयनि स्सिय चउव्विहं पण्णत्त, तजहा—उप्पत्तिया १ वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४। बुद्धि चउ-व्विहा वुत्ता, पचमा नोवलब्भइ ।६८॥ सू० ॥ २६ ॥ पुव्वमदिट्ठमस्सुयमवेइय, तक्खणविसुद्धगहियत्था। अव्वाहयफलजोगा, बुद्धि उप्पत्तिया नाम ॥ ६९ ॥

भरहसिल१ पणिय२ रुक्खे३ खुड्डग४ पड५ सरड६
काय७ उचारे८। गय९ घयण१० गोल११ खंभे१२,
खुड्डग१३ मग्गि१४ त्थि१५ पइ १६ पुत्ते १७ ॥७०॥
भरह १ सिल २ मिंढ ३ कुक्कुड ४, तिल ५ वालुय ६
हत्थि ७ अगड ८ वणसडे ९। पायस १० अइया ११
पत्ते १२, खाडहिला १३ पंच पिअरो य,१४ ॥७१॥
महुसित्थ १८ मुद्दि १९ अंके २०, य नाणए २१
भिक्खु २२ चेटगनिहाणे २३। सिक्खा २४ य अत्थ-
सत्थे २५, इत्थी य मह २६ सयसहस्से २७ ॥७२॥
भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला।
उभओलोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥७३॥
निमित्ते १ अत्थसत्थे य २, लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५
अस्से ६ य। गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९, अगए १०
रहिए ११ य गणिया १२ य ॥७४॥ सीया साडी दीहं,
च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १३। निव्वोदए १४
य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाओ १५ ॥ ७५ ॥
उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला।
साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥७६॥
हेरण्णिए १ करिसए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५
घय ६ पवए ७ तुन्नाए ८ वड्ढइ य ९ पूयइ १० घड ११
चित्तकारे १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया

वयविवागपरिणामा । हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥७८॥ अभए १ सिट्ठि कुमारे २, देवी ४ उदिओदए हवइ राया ५ । साहू य नंदिसेणे ६, धणदत्ते ७ सावग ८ अमच्चे ६ ॥७६॥ खमए १० अमच्चपुत्ते ११, चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य । नासिकसुंदरिनंदे१४वइरे१५परिणामिया बुद्धी॥८०॥ चलणाहण १६ आमंडे १७, मणी १८ य सप्पे १६ य खग्गि २० थूभिंदे २१ । परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्तं असुयनिस्सियं । से किं तं सुयनिस्सियं? सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-उग्गहे १ ईहा २ अवाओ ३ धारणा ४ ॥ सू० ॥ २६ ॥ से किं तं उग्गहे? दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य, ॥ सू० २७ ॥ से किं तं वंजणुग्गहे? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे, जिब्भिंदियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंजणुग्गहे, से त्तं वंजणुग्गहे ॥ सू० ॥ २८ ॥ से किं तं अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे, जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे ॥ सू० ॥ २६ ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा

नाणावजणा पंच नामधिज्जा भवति, तजहा-ओगे-
रहणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा,
से त्त उग्गहे ॥सू०॥३०॥ से किं त ईहा? ईहा छव्विहा
पण्णत्ता, तंजहा सोइंदियईहा, चक्खिदियईहा,
घाणिंदियईहा, जिब्भिदियईहा, फासिंदियईहा,
नोइंदियईहा, तीसेणं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा
नाणा वंजणा पच नामधिज्जा भवति, तंजहा-आभो-
गणया, मग्गणया, गवेसणया, चिंता, वीमसा, से
त्त ईहा ॥ सू० ॥ ३१ ॥ से किं त अवाए ? अवाए
छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअवाए, चक्खिदि-
यअवाए, घाणिंदियअवाए, जिब्भिदियअवाए,
फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए, तस्स ण इमे एग-
ट्ठिया नाणाघोसा नाणावजणा पच नामधिज्जा भव-
न्ति, तजहा आउट्टणया, पचाउट्टणया, अवाए, बुद्धी,
विण्णाणे, से त्त अवाए ॥सू०३२॥ से किं त धारणा ?
धारणा छव्विहा पण्णत्ता तजहा-सोइंदियधारणा,
चक्खिदियधारणा, घाणिंदियधारणा, जिब्भिदिय-
धारणा, फासिंदियधारणा, नोइंदियधारणा, तीसे ण
इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावजणा पच नाम-
धिज्जा भवंति, तजहा धरणा, धारणा, ठवणा, पइट्ठा,
कोट्ठे, से त्त धारणा ॥ सू० ॥ ३३ ॥ उग्गहे इक्कस-

से नट्टे,अरुणेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्टे,एवं पक्खिप्प-माणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू. जे ण त मल्लग रावेहिइत्ति, होही से उदगबिंदू, जे ण तंसि मल्लगसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू जेण त मल्लगं भरिहित, होही से उदगबिंदू, जे ण त मल्लग पवाहेहिति, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमा-णेहिं अणतेहिं पुग्गलेहिं जाहे त वजण पूरिय होइ, ताहेहुति करेइ नो चेव ण जाणइ के वेस सद्दाइ? तओ ईह पविसई,तओजाणई अमुगे एस सद्दइ,तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ,तओण धारेइ सखिज्जं वा काल,असखिज्जं वा काल, से जहानामए केइ पुरसे अव्वत्त सद्द सुणिज्जा, तेण सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सद्दाइ, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त रूव पासिज्जा तेण रूवत्ति उग्ग हिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रूवत्ति, तओ ईह-पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण

सइ, तओ ण धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइपुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेणं गंधत्तिउग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधेत्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए-केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ,तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसवेइज्जा तेणं फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासओत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे

एम सुमिणे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ संखेज्जं वा काल, असखेज्ज वा काल, से त्त मल्लगदिट्ठतेण ॥ सू० ३५ ॥ त समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वाइ दव्वाइ जाणइ, न पासइ। खेत्तओण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व खेत्त जाणइ न पासइ। कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व काल जाणइ न पासइ। भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हुंति चत्तारि।
आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेण ॥ ८२ ॥
* अत्थाण उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा।
ववसायम्मि अवाओ, धरण पुण धारण विंति ॥८३॥
उग्गह इक्क समय, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु।
कालमसख सखं, च धारणा होई नायव्वा ॥ ८४ ॥
पुट्ठ सुणेइ सद्द, रूव पुण पासइ अपुट्ठ तु।
गध रस च फास च, बद्धपुट्ठ वियागरे ॥ ८५ ॥

* अत्थाण उग्गहण, च उग्गह तह वियालण ईह। ववसाय च अवाय धरण पुण धारण विंति ॥ १ ॥ इति पाठान्तरगाथा।

भासाममसेढीओ, सद्द ज सुणइ मीसिय सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्द, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ८६ ॥
ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्व आभिणिबोहिय ॥ ८७ ॥

से त्त आभिणिबोहियनाणपरोक्ख, से त्त मइनाण ॥ सू० ॥ ३६ ॥ से किं त सुयनाणपरोक्ख ? सुयनाणपरोक्ख चोद्दसविह पण्णत्त तजहा-अक्खरसुय १ अणक्खरसुय २ सण्णिसुय ३ असण्णिसुय ४ सम्मसुय ५ मिच्छसुय ६ साइय ७ अणाइय ८ सपज्जवसिय ९ अपज्जवसिय १० गमिय ११ अगमिय १२ अगपविट्ठ १३ अणगपविट्ठ १४ ॥ सू० ॥ ३७ ॥ से किं त अक्खरसुय ? अक्खरसुय तिविह पण्णत्त तजहा—सन्नक्खर, वजणक्खर, लद्धिअक्खर । से किं त सन्नक्खर ? सन्नक्खर अक्खरस्स सठाणागिई, से त्त सन्नक्खर । से किं त वजणक्खर ? वजणक्खरअक्खरस्स वजणाभिलावो, से त्त वजणक्खर । से किं त लद्धिअक्खर ? लद्धिअक्खर अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खर समुप्पजइ, तजहा—सोइदिय लद्धिअक्खर, चक्खिदिय लद्धिअक्खर, घाणिंदिय लद्धिअक्खर, रसणिंदिय लद्धिअक्खर, फासिंदिय लद्धिअक्खर, नोइदिय लद्धिअक्खर, से त्त

लद्धिअक्खर, से त्त अक्खरसुयं ॥ से किं त अण-
क्खरसुय? अणक्खरसुय अणेगविह पएणत्त, नजहा—
ऊससिय नीससिय, निच्छूढ खासिय च छीय च।
निस्सिंघियमणुसार, अणक्खर छेलियाईय ॥ ८८ ॥

से त्त अणक्खरसुयं ॥ सू० ॥ ३८ ॥ से किं त
सरिणसुय ? सरिणसुय तिविह पएणत्त, तजहा—
कालिओवएसेण, हेऊवएसेण, दिट्ठिवाओवएसेण।
से किं त कालिओवएसेण ? कालिओवएसेण जस्स
ण अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता,
वीमंसा, से ण सएणीति लब्भइ। जस्सणं नत्थि
ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमसा,
से ण असएणीति लब्भइ, से त्त कालिओवएसेण।
से किं त हेऊवएसेण ? हेऊवएसेण जस्सण अत्थि
अभिसधारणपुव्विया करणसत्ती से ण सएणीति
लब्भइ। जस्स ण नत्थि अभिसधारणपुव्विया करण-
सत्ती से ण असएणीति लब्भइ, से त्त हेऊवएसेणं।
से किं त दिट्ठिवाओवएसेण ? दिट्ठिवाओवएसेणं
सरिणसुयस्स खओवसमेण सएणी लब्भइ, अस-
रिणसुयस्स खओवसमेण असएणी लब्भइ, से त्त
दिट्ठिवाओवएसेण, से त्त सरिणसुय, से त्त अस-
रिणसुय ॥ सू० ॥ ३९ ॥ से किं त सम्मसुय ? सम्म-

सुय ज इम अरहतेहिं भगयनेहि उ[illegible]
णधरेहिं तेलुक्कनिरिक्खियमहियपूइएहिं [illegible]
णणमणागयजाणएहि सव्वण्णूहि सव्वदरिसीहिं
पणीय दुवालसग गणिपिडग, तजहा—आयारो १
सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपण्णत्ती ५
नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगड-
दसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ६ पण्हावागर
णाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ १२, इच्चेय दुवा-
लसग गणिपिडग चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुय, अभि
ण्णदसपुव्विस्स सम्मसुय, तेण पर भिण्णेसु भयणा,
से त्त सम्मसुय ॥ सू० ४० ॥ से किं त मिच्छासुय ?
मिच्छासुय ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं
सच्छदबुद्धिमइविगप्पिय, तजहा—भारह, रामा
यण, भीमासुरुक्ख, कोडिल्लय, सगडभद्दियाओ,
खोड (घोडग) मुह, कप्पासिय, नागसुहुम, कणग-
सत्तरी, वइसेसिय, बुद्धवयण, तेरासिय, काविलिय,
लोगायय, सट्ठितत, माढर, पुराण, वागरण, भाग-
वय, पायजली, पुस्सदेवय, लेह, गणिय, सउणरुय,
नाडयाइ, अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया
सगोवगा, एयाइ मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहि-
याइ मिच्छासुय, एयाइ चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्त

परिग्गहियाइं सम्मसुय, अहवा मिच्छदिट्ठिस्सवि एयाइ चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ चयंति, से त्त मिच्छा सुय ॥ सू० ॥ ४१ ॥ से किं त साइय सपज्जवसिय, अणाइय अपज्जवसिय च ? इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडगं वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइय सपज्जवसियं अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसिय, त समासओ चउव्विहं पण्णत्त, तजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ ण सम्मसुय एग पुरिस पडुच्च साइय सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, खेत्तओ ण पच भरहाइ पचेरवयाइ पडुच्च साइय सपज्जवसियं, पच महाविदेहाइ पडुच्च अणाइय अपज्जवसियं, कालओ ण उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइयं सपज्जवसिय, नो उस्सप्पिणि नो ओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, भावओ ण जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दंसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जति, ते तया भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसिय खाओवसमिय पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जव-

सिय, अहवा भवसिद्धियस्स सुय साइय सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स सुय अणाइय अपज्जवसिय च, सव्वागासपएसग्ग सव्वागासपएसेहि अणतगुणिय पज्जवक्खर निप्फज्जइ, सव्वजीवाणपि य ण अक्खरस्स अणतभागो, निच्चुग्घाडियो जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्तं पाविज्जा,—"सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चद-सूराण" से त्त साइय सपज्जवसिय, से त्त अणाइयं अपज्जवसिय ॥ सू० ॥ ४२ ॥ से किं त गमिय? गमिय दिट्ठिवाओ, से किं त अगमिय अगमियं कालिय सुय, से त्त गमिय, से त्त अगमिय। अहवा त समासओ दुविह पण्णत्त, तजहा—अगपविट्ठ, अग बाहिर च। से किं त अगबाहिर? अगबाहिरं दुविह पण्णत्त, तजहा—आवस्सय च, आवस्सयवइरित्त च। से कि त आवस्सय? आवस्सय छव्विह पण्णत्त, तजहा—सामाइय, चउवीसत्थओ, वदणय, पडिक्कमण, काउस्सग्गो, पच्चक्खाण, से त्त आवस्सय। से किं त आवस्सयवइरित्त? आवस्सयवइरित्त दुविह पण्णत्त, तजहा—कालिय च, उक्कालिय च। सेकिंतउक्कालिय? अणेगविह पण्णत्त,तजहा-दसवेयालिय, कप्पियाकप्पिय, चुल्लकप्पसुय, महाक-

प्पसुय, उववाइय, रायपसेणिय, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं, नंदी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ, तंदुलवेयालिय, चंदाविज्झय, सूरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डल, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयविसोही, वीयरागसुयं, सलेहणासुय, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाण, महापच्चक्खाण, एवमाइ, से त्त उक्कालिय। से किं त कालियं ? कालियं अणेगविह पण्णत्त, तजहा— उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीह, महानिसीह, इसिभासियाइ, जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चंदपन्नत्ती, खुड्डिया विमाणपविभत्ती- महल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, वियाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावलियाओ, निरयावलियाओ कप्पियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ, आसीविसभावणाण, दिट्ठिविसभावणाण, सुमिण भावणाण महासुमिणभावणाण, तेयग्गिनिसग्गाण, एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं

भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखिज्जाइ पइन्नगसहस्साइ मज्झिमगाण जिणवराण, चोद्दस पइन्नगसहस्साइ भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अयहा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइ पइण्णगसहस्साइ पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव, से त्त कालिय, से त्त आवस्सयवइरित्त, से त्त अणगपविट्ठ ॥सु०॥४२॥ से किं त अगपविट्ठ? अगपविट्ठ दुवालसविह पण्णत्त, तजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ १२ ॥ सू० ॥ ४४ ॥ से किं त आयारे? आयारे ण समणाण निग्गथाण आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामायावित्तीओ आघविज्जति, से समासओ पचविहे पण्णत्ते, तजहा—नाणायारे, दसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे ण परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से

एं अंगट्टयाए पढमे अगे, दो सुयक्खधा, पणवीसं अज्झयणा, पचासीइ उद्देसणकाला, पंचासीई समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइ पयग्गेणं, सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जंति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदंसिज्जंति, उवदसिज्जति, से एवं आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त आयारे १ ॥ सू० ॥ ४५ ॥ से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जति, अजीवा सूइज्जति, जीवाजीवा सूइज्जति, ससमए सूइज्जद, परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईण, सत्तट्ठीए अण्णाणीयवाईण, बत्तीसाए वेणइयवाईण, तिण्ह तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूह किचा ससमए ठाविज्जइ, सूयगडे णं परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्टयाए बिइए अगे, दो सुयक्ख-

धा, तेवीस अज्झयणा, तित्तीस उद्देसणकाला, तित्तीस समुद्देसणकाला, छत्तीस पयसहस्साइं पयग्गेण, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं सूयगडे २ ॥सू०॥४६॥ से किं तं ठाणे? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमयपरसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ, । ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघविज्जंति । ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ । ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दसअज्झयणा

एगवीसं उद्देसणकाला, एकवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरि पयसहस्सा पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं ठाणे ॥सू०॥ ४७॥ से किं त समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ; दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ, समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ, निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ, पडिवत्तीओ, से णं अगट्ठयाएचउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले

सयसहस्से पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, परूणविज्जति, पहविज्जति, दसिज्जति निदंसिज्जति, उवदसिज्जति। से एव आया, एवं नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त्त समवाए ४॥ सू०॥ ४८॥ से किं तं विवाहे? विवाहे ण जीवा विआहिज्जति, अजीवा विआहिज्जति, जीवाजीवा विआहिज्जति, ससमए विआहिज्जति, परसमए विआहिज्जति, ससमणपरसमए विआहिज्जति, लोए विआहिज्जति, अलोए विआहिज्जति, लोयालोए विआहिज्जति, विवाहस्सणं परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए पचमे अगे, एगे सुयखधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए, दस उद्देसगसहस्साइ, दस समुद्देसगसहस्साइ, छत्तीस वागरणसहस्साइ, दो लक्खा अट्ठासीइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता

भावा आघविज्जति पएणविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एवं नाया, एव विएणाया, एच चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त विवाहे ५॥सू०॥४६॥से किं त नाया धम्मकहाओ ? नायाधम्मकहासु ण नायाणं नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइं, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपचायाईओ, पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ य आघविज्जति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ ण एगमेगाए धम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइ, एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उवाक्खाइया सयाइ एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइ एवामेव सपुव्वावरेण अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवतित्ति समक्खाय। नायाधम्मकहाए परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खधा,

एगूणवीस अज्झयणा, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू० ॥ ५० ॥ से किं त उवासगदसाओ? उवासगदसासु ण समणोवासयाण नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपासहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपच्चाईओ, पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ य आघविज्जति, उवासगदसाण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से ण अग-

ट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पन्नविज्जति परूविज्जंति दसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जंति, से एव आया, एवं नाया, एव विन्नाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त उवासगदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५१ ॥ स किं त अंतगडदसाओ ? अतगडदसासु णं अंतगडाण नगराइ, उज्जाणाइं, चेइयाइ, वणसंडाइं, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचागा, पव्वज्जाओ परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ, अंतकिरियाओ, आघविज्जति, अतगडदसासु ण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणी, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ से ण अगट्ठयाए अट्ठमे अगे, एगे सुयक्खधे, अट्ठ वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला

यकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघ-विज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निद-सिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणरूवणा आघविज्जइ; से त्त पण्हावागरणाइ १० ॥ सू० ॥ ५४ ॥ से कि त विवागसुय ? विवागसुए ण सुकडदुक्कडाण कम्माण फलविवागे आघविज्जइ, तत्थ ण दस दुह-विवागा दस सुहविवागा । से कि त दुहविवागा ? दुहविवागेसु ण दुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ, चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मा-पियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपर लोइया इड्ढिविसेसा, निरयगमणाइ, ससारभवपवचा दुहपरपराओ, दुकुलपचायाइओ, दुल्लहबोहियत्त, आ-घविज्जइ, से त्त दुहविवागा। से किंत सुहविवागा ? सुहविवागेसु ण सुहविवागाण नगराइ, उज्जणाइ, वणसडाइ चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मा पियरो, धम्मायरिया धम्मकहाओ, इहलोइयपरलो इया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचागा, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपचक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुहपरपराओ, सुकुलपचायाईओ, पुणबोहिलाभा,

अतकिरियाओ, आघविज्जंति। विवागसुयस्स ण परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अगट्टयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खधा, वीस अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीस समुद्देसणकाला, संखिज्जाइ पयसहस्साइं पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनियद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विन्नाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं विवागसुय ११ ॥ सू० ५५ ॥ से कि त दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाएण सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ, से समासओ पचविहे पण्णत्ते, तजहा-परिकम्मे १ सुत्ताइ २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५। से कि त परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तजहा-सिद्धसेणिया परिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुयाचुयसेणियाप-

रिकम्मे ७। से किं त सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्ध सेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा-माउगा पयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगास-पयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्ग-हो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४, से त्तं सिद्ध सेणियापरिकम्मे १। से किं तं मणुस्ससेणियापरि-कम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा माउयापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एग-गुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४, से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २। से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ? पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारस विहे पण्णत्ते, तजहा पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउ-भूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११ से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३। से किं तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ? ओगाढसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तजहा पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं

६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ६ नदावत्त १० ओगाढावत्त ११, से त्त ओगाढसेणियापरिकम्मे ४। से किं त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसपज्जणसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पराणत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइ १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुणं ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८संसारपडिग्गहो ६ नदावत्त १० उवसंपज्जणवत्त ११, से त्त उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५। से किं त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पराणत्ते, तजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ६ नंदावत्त १० विप्पजहणावत्त ११, से त्त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६। से किं त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पन्नत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ६ नदावत्तं १० चुयाचुयवत्त ११, से त्त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। छ चउक्कनइयाइं, सत्त तेरासियाइं, से त्तं परिकम्मे १।

अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू, दुवालस चूलिया-वत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाण-प्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवाय-पुव्वस्स ण दोण्णिवत्थूपण्णत्ता। आयप्पवायपुवस्स ण सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स ण तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणपुव्वस्स ण वीसं वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स ण पन्नरस वत्थू पण्णत्ता। अवझपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स ण तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरिया-विसाल पुव्वस्स ण तीस वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदु-सारपुव्वस्स ण पणुवीस वत्थू पण्णत्ता, गाहा—

दस १ चोदस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि। सोलस ७ तीस ८ वीसा ९, पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥ ९० ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेवदस ४ चेव चुल्लवत्थूणि। आइल्लण चउण्ह, चूलिया नत्थि ॥९१

से त पुव्वगए। से किं त अणुओगे? अणुओगे

अजीवा अणता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा, अणता असिद्धा पएणत्ता—
भावमभावा हेऊमहेउ कारणमकारणे चेव ।
जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥६२॥

इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए काले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससारकतारं अणुपरियट्टिंसु । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पएणकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टति । इच्चेइय दुवालसगं गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरतं ससारकतार अणुपरियट्टिस्सति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए काले अणता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरत संसारकतार वीईवइंसु । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडिग पडुप्पएणकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चउरंत ससारकंतार वीईवयति । इच्चेइय दुवालसगं गणिपिडगअणागए काले अणता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं ससारकतार वीईवइस्संति । इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडिग न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवई य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए

अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से जहानामए पच-त्थिकाए न कयाइनासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भवि-स्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वांइ जाणइ पासइ, खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्व खेत्त जाणइ पासइ, कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्व सेत्त जाणइ पासइ, भावओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ, ॥ सू ॥ ५७ ॥

अक्खर सन्नी सम्मं, साइय खलु सपज्जवसियं च।
गमिय अगपविट्ठ, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ६३ ॥
आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
विंति सुयनाणलभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥ ६४ ॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४

य ईहएयावि ५। तत्तो अपोहए ६ वा, धारेइ करेइ वा सम्म ८॥ ६५॥

सूत्र हुकार वा, वाढक्कार पडिपुच्छ वीमसा तत्तो पसगपारायण च परिणिट्ठ सत्तमए॥६६॥

सुत्तत्थो खलु पढमो वीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ। तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे॥ ६७॥

सेत्त अगपविट्ठ, से त्त सुयनाण, से त्तं परोक्ख-नाण, से त्त नदी॥ नदी समत्ता॥

इअ नंदीसुत्तं सम्मत्तम्

पुस्तकें मिलने के पते—

१—जैन हितेच्छु श्रावक मडल, रतलाम

२—घासीलाल चाँदमल जैन सदर शराय, रतलाम

३—छोटेलाल यति रांगडी चौक, बीकानेर

४—जैनप्रकाश पुस्तकालय सुजानगढ

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या *उसको स्वाधीन कहो ।
भक्त भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो ॥
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं ।
निज पर के हित साधन में जो, निशिदिन तत्पर रहते हैं ॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं ॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥
अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ ।
बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ ॥
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
दीन दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे ॥
दुर्जन-क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ न मेरे को आवे ।
साम्य भाव रखूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥
गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे, नित दृष्टि न दोषों पर जावे॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ, या मृत्यु आज ही आ
अथवा कोई कैसा ही, भय या [illegible] देने
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, [illegible]
होकर सुख में मग्न न फूले
पर्वत, नदी श्मशान
रहे अडोल अकंप ॥५
इष्ट वियोग अनिष्ट
सुखी रहें सब जीव
बैर पाप अभि
घर घर चर्चा ॥६
ज्ञान चरित उन्नत
ईति भीति व्यापे
परम अहिंसा

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे, नित दृष्टि न दोषों पर आवे॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ, या मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही, भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावें।
पर्वत, नदी, श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावें॥
रहे अडोल, अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहन शीलता दिखलावें॥
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर पाप अभिमान छोड़, जग नित्य नये मंगल गावें॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें॥
ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे
धर्म निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय, कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे॥
बनकर सब "युग-वीर" हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करें॥
